प्र. २. (इ) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'पेड़ होने का अर्थ' कविता का रसास्वादन कीजिए : ६

(१) रचनाकार का नाम। १

(२) पसंद की पंक्तियाँ। १

(३) पसंद आने का कारण। २

(४) कविता की केंद्रीय कल्पना। २

अथवा

- 'बसंत और सावन ऋतु जीवन के सौंदर्य का अनुभव कराती हैं।' इस कथन के आधार पर 'लोकगीत' कविता का रसास्वादन कीजिए।

प्र. २. (इ) **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'नवनिर्माण' कविता का रसास्वादन कीजिए :** ६

(१) रचनाकार का नाम। १

(२) पसंद की पंक्तियाँ। १

(३) पसंद आने का कारण। २

(४) कविता की केंद्रीय कल्पना। २

अथवा

- **'आँसुओं को पोंछकर अपनी क्षमताओं को पहचानना ही जीवन है' इस सच्चाई को समझाते हुए 'सच हम नहीं, सच तुम नहीं', कविता का रसास्वादन कीजिए।**

पाठ ३ सच हम नहीं; सच तुम नहीं

रसास्वादन | मुद्दों के आधार पर

प्र. १. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'सच हम नहीं, सच तुम नहीं' कविता का १०० से १२० शब्दों में का रसास्वादन कीजिए।

उत्तर :

(१) **रचना का शीर्षक :** सच हम नहीं; सच तुम नहीं।

(२) **रचनाकार :** डॉ. जगदीश गुप्त।

(३) **कविता की केंद्रीय कल्पना :** प्रस्तुत कविता में निरंतर आगे बढ़ते रहने, संघर्ष करते रहने और मार्ग में आने वाली रुकावटों की परवाह न करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी गई है। यही इस कविता की केंद्रीय कल्पना है।

(४) **रस-अलंकार :** – –

(५) **प्रतीक विधान :** इस कविता में संघर्ष का मार्ग त्याग कर नत हो जाने वाले, किसी की अधीनता स्वीकार कर लेने वाले को मृतक के समान हो जाना कहा गया है। कवि ने इस तरह के मृत व्यक्ति के लिए 'डाल से झड़े हुए फूल' का प्रतीक के रूप में उपयोग किया है।

(६) **कल्पना :** जीवन में दृढ़तापूर्वक संघर्ष का मार्ग अपनाना और निराश हुए बिना उस पर अडिग रहना ही जीवन की एकमात्र सच्चाई है।

(७) **पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव :** कविता की पसंद की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

अपने हृदय का सत्य,
अपने आप हमको खोजना।
अपने नयन का नीर,
अपने आप हमको पोंछना।

इन पंक्तियों से अपनी समस्याओं को पहचानने और उनका समाधान ढूँढ़ने के लिए बिना किसी की सहायता की उम्मीद किए स्वयं कमर कस कर तैयार होने की प्रेरणा मिलती है।

(८) **कविता पसंद आने का कारण :** कवि ने इस पंक्ति में यह बताया है कि संघर्ष में असफलता हाथ लगे, तो भी निराश होने की जरूरत नहीं है। हमें अपने आप अपनी आँखों के आँसू पोंछकर फिर से हिम्मत के साथ संघर्ष में जुट जाना है।

रसास्वादन | अर्थ के आधार पर

• 'आँसुओं को पोंछकर अपनी क्षमताओं को पहचानना ही जीवन है' इस सच्चाई को समझाते हुए 'सच हम नहीं, सच तुम नहीं' कविता का रसास्वादन कीजिए।

उत्तर : डॉ. जगदीश गुप्त द्वारा लिखित कविता 'सच हम नहीं, सच तुम नहीं' में जीवन में निरंतर संघर्ष करते रहने का आह्वान किया गया है।

कवि पानी-सी बहने वाली सीधी-सादी जिंदगी का विरोध करते हुए संघर्षपूर्ण जीवन जीने की बात करते हैं। वे कहते हैं, जो जहाँ भी हो, उसे संघर्ष करते रहना चाहिए। संघर्ष में मिली असफलता से निराश होने की आवश्यकता नहीं है। ऐसी हालत में हमें किसी के सहयोग की आशा नहीं करनी। हमें अपने आप में खुद हिम्मत लानी होगी और अपनी क्षमता को पहचानकर नए सिरे से संघर्ष करना होगा। मन में यह विश्वास रखकर काम करना होगा कि हर राही को भटकने के बाद दिशा मिलती ही है और उसका प्रयास व्यर्थ नहीं जाएगा। उसे भी दिशा मिलकर रहेगी।

कवि ने सीधे-सादे शब्दों में प्रभावशाली ढंग से अपनी बात कही है। अपनी बात कहने के लिए उन्होंने 'अपने नयन का नीर पोंछने' शब्द समूह के द्वारा हताशा से अपने आप को उबार कर स्वयं में नई शक्ति पैदा करने तथा 'आकाश सुख देगा नहीं, धरती पसीजी है नहीं' से यह कहने का प्रयास किया है कि भगवान तुम्हारी सहायता के लिए नहीं आने वाले हैं और धरती के लोग तुम्हारे दुख से द्रवित नहीं होने वाले हैं। इसलिए तुम स्वयं अपने आप को सांत्वना दो और नए जोश के साथ आगे बढ़ो। तुम अपने लक्ष्य पर पहुँचने में अवश्य कामयाब होंगे।

पाठ ५ (अ) गुरुबानी

रसास्वादन | मुद्दों के आधार पर

प्र. १. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर १०० से १२० शब्दों में दोहों-पदों का रसास्वादन कीजिए।

उत्तर :

(१) **रचना का शीर्षक :** गुरुबानी।

(२) **रचनाकार :** गुरु नानक।

(३) **कविता की केंद्रीय कल्पना :** प्रस्तुत दोहों-पदों में गुरु के महत्त्व, ईश्वर की महिमा तथा प्रभु का नाम स्मरण करने से ईश्वर प्राप्ति की बात ...

(४) रस-अलंकार :

गगन में थाल, रवि-चंद्र दीपक बने।
तारका मंडल जनक मोती।
धूप मलयानिल, पवनु चँवरो करे।
सकल वनराइ फुलंत जोति।।

यहाँ कहा गया है कि गगन ही थाल है; सूर्य-चंद्रमा ही दीपक हैं; तारका मंडल मोती है; मलयानिल ही धूप-गंध है; जंगल की समस्त वनस्पतियाँ फूल हैं। इसलिए यहाँ **रूपक** अलंकार है।

(५) प्रतीक विधान : प्रस्तुत कविता में कवि ने गुरु का चिंतन न करने वालों तथा अपने आप को ही ज्ञानी समझने वालों को बिना संरक्षकवाले व्यक्ति कहा है। इसके लिए कवि ने निर्जन स्थान पर उगी हुई तिल्ली के पौधे का प्रतीक के रूप में उपयोग किया है।

(६) कल्पना : जीवन में गुरु का महत्त्व, कर्म की महानता तथा प्रभु के नाम का स्मरण ही प्रभु प्राप्ति का मार्ग है।

(७) पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव : कविता की पसंद की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं

नानक गुरु न चेतनी मनि आपणे सुचेत।
छूते तिल बुआड़ जिऊ सुएं अंदर खेत।
खेते अंदर छुट्टया कहु नानक सऊ नाह।
फली अहि फूली अहि बपुड़े भी तन विच स्वाह।

इन पंक्तियों में कवि ने गुरु का महत्त्व न समझने और अपने को ज्ञानी मानने वालों को मरुस्थल में पाई जाने वाली तिल्ली की फली में मिलने वाली राख कहा है, जो बहुत ही सटीक है।

(८) कविता पसंद आने का कारण : गुरु नानक ने इन पंक्तियों में यह बताया है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो गुरु को महत्त्व नहीं देते और अपने आप को ही ज्ञानी मान बैठते हैं। गुरु नानक जी ऐसे लोगों की तुलना उस तिल के पौधे से करते हैं, जो किसी निर्जन स्थान पर अपने आप उग आता है और उसको खाद-पानी देने वाला कोई भी नहीं होता। इसलिए उस पौधे का विकास नहीं हो पाता। ऐसे पौधे में फूल भी लगते हैं और फली भी लगती है, पर फली के अंदर दाने नहीं पड़ते, उसमें गंदगी और राख ही होती है। वैसी ही हालत बिना गुरु के मनुष्य की होती है। ऐसे लोगों का मानसिक विकास नहीं हो पाता।

रसास्वादन | अर्थ के आधार पर

प्र. २. 'गुरु निष्ठा और भक्तिभाव से ही मानव श्रेष्ठ बनता है।' इस कथन के आधार पर १०० से १२० शब्दों में 'गुरुवाणी' कविता का रसास्वादन कीजिए। *(सितंबर '२१; जुलाई '२२)*

उत्तर : गुरु नानक का कहना है कि बिना गुरु के मनुष्य को ज्ञान नहीं मिलता। मनुष्य के अंतःकरण में अनेक प्रकार के मनोविकार होते हैं, जिनके वशीभूत होने के कारण उसे वास्तविकता के दर्शन नहीं होते। वह अहंकार में डूबा रहता है और उसमें सत्य-सही का विवेक नहीं रह जाता। ये मनोविकार दूर होता है गुरु से ज्ञान प्राप्त होने पर। यदि गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा और उनमें पूरा विश्वास हो तो मनुष्य के अंतःकरण के इन विकारों को दूर होने में समय नहीं लगता। मन के विकार दूर हो जाने पर मनुष्य में सबको समान दृष्टि से देखने की भावना उत्पन्न हो जाती है। उसके लिए कोई बड़ा या छोटा अथवा ऊँच-नीच नहीं रह जाता। उसे मनुष्य में ईश्वर के दर्शन होने लगते हैं। उसके लिए ईश्वर की भक्ति भी सुगम हो जाती है। गुरु नानक ने अपने शब्दों में इस बात को सरल ढंग से कहा है।

इस तरह गुरु के प्रति सच्ची निष्ठा और भक्ति-भावना से मनुष्य श्रेष्ठ मानव बन जाता है।

पाठ ५ (आ) | वृंद के दोहे

रसास्वादन | मुद्दों के आधार पर

प्र. १. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर १०० से १२० शब्दों में 'वृंद के दोहे' का रसास्वादन कीजिए।

उत्तर :

(१) रचना का शीर्षक : वृंद के दोहे।

(२) रचनाकार : वृंद। (पूरा नाम : वृंदावनदास)

(३) कविता की केंद्रीय कल्पना : प्रस्तुत दोहों में कई नीतिपरक बातों की सीख दी गई है। इस तरह कविता की केंद्रीय कल्पना नीतिपरक बातें हैं।

(४) रस-अलंकार : – –

(५) प्रतीक विधान : कवि वृंद के दोहों मे समझाने के लिए कई प्रतीकों का सुंदर उपयोग किया है। कविता में प्रयुक्त इन प्रतीकों में नयना, सौर (चादर), काठ की

विभाग 2 : पद्य : अंक 20

कृति 2 (अ) पद्यांश लगभग 8 से 12 पंक्तियों में **06**

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(आ) पद्यांश लगभग 8 से 12 पंक्तियों में **06**

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(इ) रसास्वादन कीजिए (100 से 120 शब्दों में) **06**

(दो में से एक)

(ई) एक वाक्य में उत्तर (चार में से दो) **02**

(साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान पर)